International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

श्रीमद्भागवत पुराण में स्त्री-दशा

- डा. बिहारीलाल मीना

एसो सएट प्रोफेसर-संस्कृत

राजकीय महा वद्यालय, गंगापुर सटी(राज.)

प्रस्तावना

स्त्री अनादिकाल से सृष्टि का मूल रही है। वे कसी भी समाज अथवा राष्ट्र की आधी जनसंख्या है। राष्ट्र की प्रगति में नारी जाति का पुरूष के समान ही महत्त्व है। जीवन-रथ अपने स्त्री और पुरूष रूपी दोनो चक्रो के सन्तु लत योगदान से ही सम्यकरूपेण परिचा लत होता है। कसी भी देश की सभ्यता और संस्कृति को जानने के लए उस देश में स्त्री के पद तथा स्थिति को जानना आवश्यक हो जाता है। इसको जाने बिना हम संस्कृति का सही मूल्यांकन ही नही कर सकते।[१]

श्रीमद्भागवत में स्त्री दशा की पारिवारिक सामाजिक व राजनीतिक स्थिति का निरूपण यहाँ अपे क्षत है।

पत्नी रूप में स्त्री

श्रीमद्भागवत पुराण में पत्नी व गृहिणी रूप में स्त्री की महिमा का वशद ववेचन मलता है। स्त्री- वहीन घर को बिना पहिये के रथ के समान बताया गया है, जिसमें रहकर पुरूष भी प्रसन्न नहीं रह सकता। [२] सद्गृहिणी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

के उपकारों का बदला पुरूष इस जन्म में तो क्या , जन्म जन्मान्तर में भी नहीं चुका सकता।[३] भागवत में पत्नी को पति की अर्द्धां गनी[४] तथा धर्म, अर्थ और काम इन तीनों पुरूषार्थों की स द्ध का मूल माना गया है।[५] भागवत युग में स्त्री पति की सहध र्मणी थी, जिसके बिना कोई भी धा र्मक अनुष्ठान पूर्ण नहीं माने जाते थे।[६] पत्नी के प्रति सम्मान व प्रेम में कोई कमी न थी। पति पत्नी की भावनाओं का सम्मान करना अपना क र्तव्य समझते थे।[७] समाज की दूसरी तस्वीर यह थी क कुछ लोगो का अपनी एक पत्नी पर अत्य धक प्रेम था, वहीं अन्य पत्नियों के प्रति उपेक्षापूर्ण बर्ताव था। राजा उत्तानपात का सुनीति के प्रति दासी तुल्य भी प्रेम न था।[८] राजा चत्रकेतु की सन्तानहीन पत्नियों को सम्मानजनक जीवन-स्थिति प्राप्त न थी।[९] वस्तुतः भागवत संस्कृति में परस्पर निर्भर एवं समन्वित जीवन में ही दाम्पत्य जीवन की सार्थकता मानी गई है। अतः जहाँ पत्नी त्याग निन्दनीय माना जाता था,[१०] वही पति चाहे जैसा भी हो , उसका त्याग करना सर्वथा नि षद्ध था।[११] सुखद दाम्पत्य जीवन के हित में पताकुल और पतिकुल दोनो में ववाद की स्थिति में पति के अनुकूल व्यवहार की अपेक्षा की जाती थी।[१२] पत्नियों के प्रति अपने कर्त्तव्य पालन में पुरूष भी पीछे न थे। भागवतकाल में पत्नियों के प्रति पतियों के उत्कृष्ट कर्त्तव्य-पालन के दिग्दर्शन होते हैं।

सतीदाह की घटना से आहत शव का प्रलय के लए उद्योग यह प्रमा णत करता है क श्रेष्ठ पुरूष अपनी पत्नी के स्त्रीत्व की रक्षा के लए बडी से बडी कुर्बानी देने को तत्पर रहते थे। रामायण के राम-रावण युध्य का भी यही प्रयोजन था।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

माँ के रूप में स्त्री

भागवतकालीन समाज में पुत्र का महत्व अ धक था। अतः स्त्री का मातृरूप उसे गरिमा प्रदान करता था। [१३] पुत्र-जननी होने के कारण स्त्री पति का सम्मान पाती थी। [१४] पुत्रहीन स्त्रियों की दशा बहुत शोचनीय थी। वे व्यावहारिक जीवन में पति की उपेक्षा का शकार हो जाती थी। षष्ठम स्कन्ध में राजा चत्रकेतु की निःसन्तान पत्नियों का वार्तालाप तत्कालीन समाज में निःसन्तान स्त्रियों की दयनीय दशा का जीवन्त चत्र उपस्थित करता है। वे कहती है , पुत्रहीन स्त्री बहुत ही अभा गन होती है। पुत्रवाली सौतें तो दासी के समान उसका तिरस्कार करती है। और तो और स्वयं पतिदेव ही उसे पत्नी करके नहीं मानते। सचमुच पुत्रहीन स्त्री धक्कार के योग्य है। भला, दा सयों को क्या दुःख है, वे तो अपने स्वामी की सेवा करके निरन्तर सम्मान पाती रहती हैं। परन्तु, हम अभा गनी तो इस समय उनसे भी गयी-बीती हो रही हैं और दा सयों की दासी के समान बार-बार तिरस्कार पा रही हैं।[१५] स्वयं राजा चत्रकेतु का जितना प्रेम बच्चे की माँ कृतद्युति में था, उतना दूसरी रानियों में न था। [१६] भागवतकालीन समाज पतृसत्तात्मक था। अतः पुत्र पर पता का अ धकार माना जाता था।[१७] भागवत में एक ओर सुरू च जैसी माँ का दिग्दर्शन होता है, जिसने अपने सौतेले पुत्र ध्रुव के प्रति हृदय की संकीर्णता का परिचय दिया। वही दूसरी ओर वात्सल्य-मूर्ति यशोदा का निरूपण है, जिसने दूसरे के पुत्र का औरस पुत्र से भी अ धक ममता से पालन पोषण कर नारी जाति के सम्मुख मातृत्व का स्पृहणीय प्रतिमान रखा।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

नारी की सामाजिक स्थिति

भागवतकालीन स्त्री पति की सहध र्मणी थी। वह सार्वजनिक जीवन में पति के साथ सम्मान पाती थी। यथा दक्षयज्ञ में अति थगण सपत्नीक पधारे। दक्ष ने उनका यथो चत सम्मान कया।[१८] आजकल की भाँति भागवत युग में भी दो प्रकार की स्त्रियाँ थी। अ धकांश स्त्रियाँ गृहिणी थी। वे अपना अ धकांश समय घरेलू कार्यो में व्यतीत करती थी और कभी कभार ही बाहर निकलती थी। प्रथम स्कन्ध में व र्णत है क जब कृष्ण राजमार्ग से गुजर रहे थे, तब द्वारिका की कुल-स्त्रियाँ उन्हें देखने के लए अपने-अपने घरों की अटारियों पर चढ़ गई।[१९] ब्रज की गो पयों को भी इसी श्रेणी में परिग णत कया जा सकता है। वे कृष्ण की वंशी की तान सुनकर अप ने-अपने घरेलू कार्यों को छोड़कर रासोत्सव में शा मल होने आती है।[२०] दूसरी श्रेणी की महिलाएँ वे थी जो पर्याप्त बो द्धक , सु श क्षत और जागरूक थी। कुन्ती , सती, रूक्मिणी, सत्यभामा आदि ऐसी ही स्त्रियाँ थी। दशम स्कन्ध से वदित होता है क रूक्मिणी ने कृष्ण को चाहा और अपने भाई की मर्जी के खलाफ कृष्ण से ववाह करने में सफल रही। उसने अपने प्रेमी कृष्ण के पास प्रणय सन्देश भी भेजा।[२१]

तत्कालीन समाज में स्त्री जीवन अप वत्र एवं स्वतन्त्रता रहित माना जाता था। कृष्ण की पत्नियों के वषय में हस्तिनापुर की रम णयों का कथन है क उन्होंने स्वतन्त्रता और प वत्रता से रहित स्त्री जीवन को प वत्र और उज्ज्वल बना दिया है।[२२] स्त्री जीवन दुर्बलता का प्रतीक था। तत्कालीन समाज की इसी मान सकता के चलते स्त्रीवध समाज में वर्जित था।[२३]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

तत्कालीन समाज में भी स्त्रियों के अपहरण , बलात्कार एवं लूटपाट के प्रमाण मलते है। नवम स्कन्ध में ववरण है क चन्द्रमा ने बृहस्पति की पत्नी तारा का अपहरण कर लया था। [२४] बृहस्पति द्वारा अपने भाई उतथ्य की पत्नी ममता के साथ बलात्कार का वर्णन मलता है। [२५] कृष्ण की पत्नियों को द्वा रिका से हस्तिनापुर लाते समय रास्ते में दुष्ट गोपों ने लूट लया था।[२६] स्त्रियों के सामाजिक समारोहों उत्सवों आदि में भाग लेने तथा घूमने फरने पर कोई प्रतिबन्ध न थे। कंस की मथुरा में आयोजित दंगल को देखने नगर की महिलाएँ भी आयी थीं।[२७]

स्त्री-धर्म का निरूपण

भागवत पुराण में स्त्री का सर्वप्रमुख कर्तव्य पति की सेवा बतलाया गया है।[२८] पतिसेवा की व ध का निर्देश करते हुए कहा गया है क वह पति के अनुकूल रहे, सर्वथा पति के नियमों की रक्षा करे , पति के सम्बन्धियों यथा सास, ससुर, ननद, देवर आदि को प्रसन्न रखे। [२९] पति की छोटी-बडी इच्छाओं को समय पर पूरा करें। वनय, इन्द्रियसंयम, सत्य और प्रयवचनों से प्रेमपूर्वक पति की सेवा करें। [३०] भागवत में स्त्री के लए उसका पति ही परमेश्वर बतलाया गया है।[३१] उसके अनुसार स्त्रियों के लए भगवान ने पति का रूप धारण कया है, अतः वे भगवान की पूजा पतिरूप में ही करती हैं।[३२] पति को परमेश्वर मानकर सेवा करने वाली स्त्री वैकुण्ठ में पति के साथ निवास करती है। [३३] स्त्री के अन्य कर्तव्यों एवं गुणों का वर्णन करते हुए भागवत में कहा गया है क वे झाडने, बुहारने, लीपने और चौका पूरने आदि से घर को अलंकृत रखे तथा घर की साम ग्रयों को साफ सूधरी रखे। [३४] जो

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कुछ मल जाए, उसी में सन्तुष्ट रहे, कसी भी वस्तु के लए ललचावे नहीं। सभी कार्यों में दक्ष हो , धर्मज्ञ हो, सत्य और प्रय बोले , अपने कर्तव्य के प्रति सावधान रहे। यदि पति पतित न हो तो प वत्रता और प्रेम से परिपूर्ण होकर उसका सहवास करे।[३५]

धर्मशास्त्रों और स्मृतियों में भी पति की सेवा ही स्त्री का प्रमुख कर्तव्य बतलाया गया है। याज्ञवल्क्य का कथन है क पति के वचनों का पालन उसका प्रमुख धर्म है। [३६] मनुस्मृति के अनुसार धन संजोना , व्यय करना, वस्तुओं को स्वच्छ एवं तरकीब से रखना , धा र्मक कृत्य करना , भोजन पकाना तथा सभी प्रकार के घर सम्बन्धी कार्य करना स्त्री के कार्य है।[३७] रामायण और महाभारत में भी पत्नी के लए पति ही देवता माना गया है। रामायण में सीता कहती है पति पत्नी के लए देवता है।[३८]

आज भारत ही नहीं , अ पतु सम्पूर्ण वश्व में समटते हुए संयुक्त परिवार व पारिवारिक रिश्तो में बढ़ते तनावों के बीच भागवत गृहिणी के आचरण का आदर्श प्रस्तुत करता है।

स्त्री और व्य भचार

भागवत पुराण में पतिव्रत धर्म की बडी महिमा व र्णत हुई है। स्त्री को पतिव्रत धर्म का कड़ाई से पालन करना पड़ता था। जमदग्नि ने गन्धर्वराज चत्ररथ के साथ मान सक व्य भचार के कारण ही अपनी पत्नी रेणुका का सर कलम करवा दिया था। [३९] समाज की दूसरी तस्वीर यह थी क कुछ कुलटा प्रकृति की स्त्रियाँ अपने ववाहित पति से प्रेम न करके परपुरूष में

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आसक्त हो जाती थीं।[४०] यहाँ तक की कुछ व्यभचारिणी स्त्रियाँ जार पुरूषों के हाथों धोके से अपने पति को मरवा देती थीं।[४१] यद्यप ऐसी स्त्रियों की भागवत में निन्दा की गई है। दशम स्कन्ध में कहा गया है क ववाहित पति को छोडकर जारपुरूष का सेवन करने वाली स्त्री कभी सुखी नहीं हो सकती।[४२] व्यभचारिणी स्त्री को दूध न देने वाली गाय , पराधीन शरीर, दुष्ट पुत्र आदि की तरह व्यर्थ बताया गया है। [४३] कुलटा स्त्री समाज में सर्वथा त्याज्य थी।[४४]

स्त्री और वैश्यावृत्ति

भागवत कालीन समाज में कुछ स्त्रियों के वैश्यावृत्ति में भी लप्त होने के प्रमाण मलते है। एकादश स्कन्ध में पगला नामक वैश्या का उल्लेख आया है, जिसने धन की कामना से वैश्यावृत्ति को अपना रखा था। [४५] छठे स्कन्ध में अजा मल नामक ब्राह्मण की कथा से वदित होता है क वह एक हरभोत नामक शूद्र स्त्री से प्रेम करता था। उस वैश्या के प्रेमपाश में पड़कर उसने अपनी ववाहित पत्नी का परित्याग कर दिया था तथा उसके लए अपनी सारी पैतृक सम्पत्ति लुटा दी थी। [४६] काणे का कथन है क ऋग्वेदिक काल से आधुनिक काल तक वैश्यावृत्ति की संस्था अस्तित्व में रही है।[४७]

स्त्री और मद्यपान

भागवत कालीन समाज में कुछ स्त्रियाँ ऐसी थीं, जो शराब का सेवन करती थी। भागवत में कहा गया है क जब अजा मल ने पहली बार देखा क एक शूद्र, जो बहुत कामी और निर्लज्ज था, शराब पीकर कसी वैश्या के

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

साथ वहार कर रहा था। वैश्या भी शराब पीकर मतवाली हो रही थी। [४८] पतित महिलाओं के साथ क्षत्रिय महिलाएँ भी शराब पीती थीं। भागवत के चतुर्थ स्कन्ध में पुरंजन की स्त्री आसक्ति का वर्णन करते हुए कहा गया है क जब वह मद्यपान करती , तब वह भी मदिरा पीता और मदोन्मत्त हो जाता था। जब वह भोजन करती, तब वह भी वही वस्तु चबाने लग जाता।[४९]

स्त्री और सतीप्रथा

भारतीय संस्कृति का सबसे काला अध्याय स तीप्रथा का प्रचलन था। भागवत पुराण में स्थल-स्थल पर सतीप्रथा के उल्लेख मलते हैं। इससे वदित होता है क भागवतकाल में सतीप्रथा सामान्य रूप से प्रच लत थी। सम्भवतः यह प्रथा क्षत्रिय कुल में अ धक प्रच लत थी। ब्राह्मणी स्त्रीयों के भी अपने पति की चता में सती होने के प्रमाण मलते हैं।[५०] भागवत के अध्ययन से वदित होता है क जहाँ वीर पुत्रों ने अपनी माँ को सती होने से बचाया, वे स्त्रियाँ सम्मान के साथ जीवन व्यापन करती थीं। प्रथम स्कन्ध में व र्णत है क आचार्य द्रोण की पत्नी कृपी अपने पुत्र की ममता के कारण सती नहीं हुई और उन्होने वधवा जीवन जिया।[५१] दृष्टान्त रूप में सतीप्रथा के कतिपय उदाहरण प्रस्तुत हैं- पृथु की पत्नी अ र्थ भी पृथु के साथ उसकी चता में प्रवेशकर सती हो गई थी।[५२] जड़भरत के पता की छोटी भार्या अपने बालको को सौत को सौंपकर सती हो गयी थी। [५३] सौर भ मुनि की पत्नियाँ सती हो गई थी। गर्भवती स्त्री सती नहीं होती थी। बाहुक की गर्भवती पत्नी सती होना चाहती थी, कन्तु मह र्ष और्व ने रोक दिया था।[५४] काणे का कथन है क वैदिक साहित्य में सती होने के वषय में कोई संकेत नही मलता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सूत्रग्रन्थों मे भी इसके वषय में कोई व ध प्रस्तुत नहीं की है। वष्णुधर्म सूत्र को छोड़कर कसी अन्य धर्मसूत्र ने भी सती होने के वषय में कोई निर्देश नहीं कया है।[५५]

शासन अ धकार

सम्भवतः भागवतकाल में स्त्रियों को शासन कार्य से दूर रखा जाता था। इस पुराण में स्त्री शासन का कोई उदाहरण नहीं मलता। नवम स्कन्ध में ववरण मलता है क मनुपुत्र सुद्युम्न शंकर के शाप से स्त्री हो गया था। पुनः शंकर की कृपा से वह एक महिना पुरूष एक महिना स्त्री हो गया , तब जाकर उसे राज्य पद दिया गया। [५६] यह ध्या तव्य है क जब सुद्युम्न स्त्री था, तब उसे राज्य भ षक्त नहीं कया गया था। पुनः भागवतकार का कथन है क चक्र क्रम से स्त्री-पुरूष होने की व्यवस्था के कारण प्रजा ने सुद्युम्न का अ भनन्दन नहीं कया।[५७]

सन्तान का अ धकार

भागवत काल में सन्तानोत्पत्ति स्त्री का नैस र्गक अ धकार माना जाता था। आपात स्थिति में भी इस अ धकार की रक्षार्थ भागवत कालीन समाज में नियोग प्रथा सामान्य रूप से प्रच लत थी। नियोग के वषय में याज्ञवल्क्य ने लखा है क जिस स्त्री के पुत्र न हुआ हो उसके साथ पता आदि गुरूजनों की अनुमति से देवर , स पण्ड़ या सगोत्र पुरूष पुत्र प्राप्ति की कामना से ऋतुकाल में समागम कर सकता है। यह समागम एक पुत्र की उत्पत्ति तक ही सी मत है अन्यथा संभोगकर्ता पतित हो जाता है। नियोग

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

व ध से उत्पन्न सन्तान पर पूर्वपरिणेता पति का ही अ धकार होता है।[५८] श्रीमद्भागवत पुराण में नियोग प्रथा के अनेक उदाहरण मलते है यथा-

१. व्यास ने अपनी माता सत्यवती की आज्ञा से अपने मृत एवं सन्तानहीन भाई की पत्नी से नियोग द्वारा धृतराष्ट्र और पाण्डु नामक दो पुत्र उत्पन्न कये।[५९]

२. राजा कल्माषपाद की आज्ञा पाकर व शष्ठ ने उनकी पत्नी में गर्भाधान कया।[६०]

नियोग प्रथा भारत में प्राचीनकाल में प्रच लत थी। जब मनुष्य के पास तप और ज्ञान था , वे कठोरता से इसके नियमों का पालन कर सकते थे। कन्तु द्वापर और क लयुग में लोगों की शक्ति और बल का ह्रास हो गया। अतः वे नियमों के पालन में असमर्थ हैं। इस लए बृहस्पति ने क लयुग में इसे नि षद्ध ठहराया है।[६१]

स्त्री- शक्षा

वैदिक काल में स्त्री शक्षा का पर्याप्त प्रसार था। ऋग्वेद में अनेक स्त्रियों एवं ऋ षकाओं का नाम आया है , जिन्होने अनेक सुक्तों की रचना की।[६२] भागवत पुराण में स्त्री- शक्षा का प्रत्यक्षतः कोई ववरण नहीं मलता। दशम स्कन्ध में यज्ञ पत्नियों के वषय में ववरण मलता है क उनके न तो यज्ञोपवीत संस्कार हुए थे न उन्होने गुरूकुल में ही निवास कया था।[६३] इससे अनुमान होता है क तत्कालीन समाज में स्त्री शक्षा का कोई व धवत

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

रूप न था। फर भी कुछ स्त्रियों के उच्च बो द्धक स्तर का अवबोध करके अनुमान होता है क तत्कालीन समाज में स्त्रियाँ भी शक्षा पाती थी। कुन्ती, सती आदि ऐसी ही गहन सु श क्षत नारियाँ थी। कुन्ती द्वारा कृष्ण की स्तुति में उसका दार्शनिक चंतन प्रकट होता है।[६४] दक्ष की यज्ञ सभा में सती का व्याख्यान उसको शास्त्रज्ञान सम्पन्न वदुषी नारी सद्ध करता है। [६५] हस्तिनापुर की रम णयों के वार्तालाप से तत्कालीन समाज की सामान्य शक्षा का पता चलता है। उनके वार्तालाप से वदित होता है क उनको जीवन, जगत, ब्रह्म, सृष्टि आदि वषयक तत्कालीन दार्शनिक वषयों का ज्ञान था। [६६] बाणासुर के मन्त्री कुभाण्ड़ की पुत्री चत्रलेखा योग वद्या में नुिपुण व चत्रकला में पारंगत थी।[६७]

निष्कर्षः-

भागवत कालीन स्त्री दशा के परिशीलन से ज्ञात होता है क एक पत्नी व गृहिणी के रूप में स्त्री अत्यन्त सम्मानित थी। पारस्परिक सौहार्द ही दाम्पत्य जीवन का आधार था। नारी का मातृरूप उसे वशेष गरिमा प्रदान करता था। भागवत में वात्सल्य-मूर्ति यशोदा का चरित्र सदैव नारी जाति के समक्ष मातृत्व का स्पृहणीय प्रतिमान प्रस्तुत करता रहेगा। स्त्री सामाजिक जीवन में पति के साथ सम्मान पाती थी। स्त्रीयों के उच्च बो द्धक स्तर से स्त्री शक्षा का बोध होता है। भागवत में स्त्री धर्म का निरूपण आज भी सम्पूर्ण नारी जाति के लए अनुकरणीय आदर्श उ पस्थित करता है। सतीप्रथा का प्रचलन व राजनैतिक अ धकारों से स्त्री को वं चत रखना ये दो

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

तत्कालीन समाज की दूर्बलताएं थी। नियोग प्रथा का प्रचलन स्त्री को मातृत्व अ धकार की गारन्टी प्रदान करता था।

सन्दर्भ

१. भारतीय संस्कृतिः डॉ. प्रीति प्रभा गोयल, पृष्ट १२६
२. श्री.भा.पु. ४.२६.१५
३. वही, ३.१४.२०
४. वही, ४.२६.१८
५. वही, ३.१४.१६
६. वही, १०.२३.२८
७. वही, ३.१४.१६
८. वही, ७.८.१६
९. वही, ६.१४.४०
१०. वही, ६.१.६५
११. वही, १०.२९.२५
१२. वही, ४.३.२४
१३. वही, ३.२३.१०
१४. वही, ३.१४.११
१५. वही, ६.१४.४०-४१
१६. वही, ६.१४.३८
१७. वही, ९.२०.२१
१८. वही, ३.३.४

१९. वही, १.४.२४

२०. वही, १०.२९.५-७

२१. वही, १०.५२.३७-४०

२२. वही, १.१०.३० व १०.२३.४२

२३. वही, ४.१७.२०, १०.४.४

२४. वही, ९.१४.४

२५. वही, ९.२०.३६-३९

२६. वही, १.१५.२०

२७. वही, १०.४४.६

२८. वही, १०.२९.२४

२९. वही, ७.११.२५

३०. वही, ७.११.२७

३१. वही, ६.१८.३३

३२. वही, ६.१८.३४

३३. वही, ७.११.२९

३४. वही, ७.११.२६

३५. वही, ७.११.२८

३६. याज्ञवल्क्य स्मृति १.७७

३७. मनुस्मृति ९.११

३८. रामायण २.३९.३१

३९. श्री.भा.पु. ९.१६.१-६

४०. वही, ४.१४.२५

४१. वही, ५.६.४

४२. वही, १०.२४.१९

४३. वही, ११.९.९

४४. वही, १०.६०.४८

४५. वही, ११.८.२३-२४

४६. वही, ६.१.६३-६६

४७. धर्मशास्त्र का इतिहास : काणे जिल्द-१ भाग पृ. ५५३

४८. श्री.भा.पु. ६.१.५९-६०

४९. वही, ४.२५.५७

५०. वही, ९.९.३६

५१. वही, १.७.४०

५२. वही, ४.२३.२२

५३. वही, ५.९.७

५४. वही, ९.७.५५

५५. धर्मशास्त्र का इतिहास, भाग पृ. ३४८

५६. श्री.भा.पु. ९.१.१३-३९

५७. वही, ९.१.४०

५८. याज्ञवल्क्य स्मृति आचाराध्याय, ३.६८-६९

५९. श्री.भा.पु. ९/२२/२४-२५

६०. वही, ९.९.३८-४०

६१. धर्मशास्त्र का इतिहास, (भाग-१) : डॉ. पी.वी. काणे पृ. सं. ३४०

६२. ऋग्वेद १०.१०९, १०.८६.२-४-९, १०.१५१, १०.३९.४०

६३. श्री.भा.पु. १०.२३.४२

६४. वही, १.८.१८-४३

६५. वही, ४.४.१७

६६. वही, १.१०.२१-२२

६७. वही, १०.६२.२२-२३ तथा १०.६२.१३-२०